दिवाकर चित्रकथा

सिद्धचक्र का चमत्कार

अंक १३ मूल्य १७.००

सुसंस्कार निर्माण विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्ध चक्र का चमत्कार

शरीर शक्ति से हजार गुनी प्रखर बुद्धि शक्ति है, लाख गुनी प्रज्ञा शक्ति तो अनन्त गुनी प्रचण्ड है आत्म शक्ति। आत्म शक्ति को अध्यात्म शक्ति भी कहते हैं। साधारण मानव जिस कार्य-सिद्धि की कल्पना भी नहीं कर सकता, वे कार्य अध्यात्म शक्ति के जागरण से सहज ही सम्पन्न हो जाते हैं। इसलिए वे कल्पनातीत कार्य, सिद्धियाँ मनुष्य को चमत्कार प्रतीत होते हैं।

नवकार महामंत्र अध्यात्म शक्ति का अक्षय स्रोत है। नवकार मंत्र में पंच परमेष्टी का स्मरण कर उस भाव में आत्म-रमण किया जाता है। इन पाँच पदों के साथ ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप रूप चार पद का भी अपूर्व अचिंत्य महत्व होने के कारण इसे नवपद भी कहा जाता है। नवपद की आराधना का जैन परम्परा में विशिष्ट महत्व है। नवपद की संरचना बताने वाली आकृति सिद्धचक्र के रूप में प्रसिद्ध है। इसलिए नवपद आराधना या सिद्धचक्र आराधना का एक ही अर्थ है लोकोत्तम शक्तियों की उपासना/आराधना कर आत्म-रमण करना।

हजारों वर्ष पूर्व मैनासुन्दरी ने नवपद की आराधना की थी। मैनासुन्दरी अटूट आत्मविश्वास, दृढ़निष्ठा तथा कर्म सिद्धान्त के प्रति समर्पित ज्ञानमयी शक्ति का रूप है। उसने संसार को यह बता दिया कि अपने सुख-दुख का कर्त्ता आत्मा स्वयं ही है और स्वयं ही उसका फल भोगता है।

ज्ञान और कर्म का सामंजस्य है उसके जीवन में। धर्मनिष्ठा के साथ आदर्श पतिव्रत-धर्म-कर्त्तव्य-परायणता और सुख-दुख में तनाव मुक्त संतुलित जीवन जीने की शैली मैनासुन्दरी से सीखनी चाहिए। कष्टों, भयों व प्रताड़नाओं के झांझावात में भी मैनासुन्दरी ने आत्मविश्वास और नवपद-श्रद्धा का दिव्य दीपक बुझने नहीं दिया। उसने ज्ञानी गुरु जनों से नवपद आराधना की विधि सीखकर साधना द्वारा जो कुछ चमत्कार अनुभव किये समूचा संसार उसके सामने विनत हो गया।

मैनासुन्दरी की आराधना के आदर्शानुरूप आज भी हजारों श्रद्धालु नवपद ओली तप के रूप में यह आराधना करके सुख-शान्ति की अभिवृद्धि का अनुभव करते हैं।

प्रस्तुत **सिद्धचक्र का चमत्कार** में श्रीपाल-मैनासुन्दरी के पवित्र चरित्र का एक भाग चित्रित है। अनुयोग प्रवर्तक उपाध्याय मुनिश्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल' के विद्वान शिष्य श्री विनय मुनिजी ने इसमें नवपद अर्थात् सिद्धचक्र आराधना-फल की रोचक कथा प्रस्तुत की है।

—श्रीचन्द सुराना सरस

लेखक	संपादक
श्री विनय मुनि "वागीश	**श्रीचन्द सुराना 'सरस'**
संयोजक एवं प्रकाशक	चित्रण
संजय सुराना	**डा. त्रिलोक**

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

राजेश सुराना द्वारा दिवाकर प्रकाशन ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-282 002
दूरभाष : (0562) 351165, 51789 के लिये प्रकाशित एवं लक्ष्मी प्रिंटीग प्रेस में मुद्रित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धचक्र का चमत्कार

चम्पानगरी के राजा सिंहरथ थे। उनकी रानी कमलप्रभा ने सुन्दर एक पुत्र को जन्म दिया। बड़ी मनोतियों के बाद पुत्र होने के कारण राजा ने धूमधाम से पुत्र का जन्मोत्सव मनाया।

प्रजा ने जय-जयकार के साथ राजा की घोषणा का स्वागत किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपाल आठ वर्ष का भी नहीं हुआ था कि अचानक उसके सिर से पिता का साया उठ गया। राजा की मृत्यु के कारण पूरे राजमहल में रुदन विलाप का मनहूस वातावरण छा गया।

सिंहरथ राजा का छोटा भाई अजितसेन था। उसने इस मौके का फायदा उठाने के लिए अपने पक्ष के लोगों से मंत्रणा की।

महल के एक वफादार परिचारक ने इस षड्यंत्र की सूचना मंत्री मतिसागर को दी। मंत्री मतिसागर तुरंत महारानी कमलप्रभा के पास पहुँचा और बोला–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रानी यह खबर सुनते ही विचलित हो उठी।

"मंत्रीजी, किसी भी प्रकार कुमार श्रीपाल की रक्षा का प्रबंध कीजिए।

महारानी जी, ऐसे समय में राजमहल के किसी भी परिचारक पर भरोसा करना खतरनाक हो सकता है, अतः आप तुरंत राजकुमार को लेकर गुप्तद्वार से चंपा से दूर कहीं जाकर छुप जाइए.....

मंत्री की व्यवस्था के अनुसार रानी राजकुमार को अपने साथ लेकर महलों के गुप्तद्वार से अंधेरी रात में जंगल की ओर अकेली निकल पड़ी। रात के घुप अंधेरे में सांय-सांय करते जंगल में रानी ठोकरें खाती, गिरती-उठती राजकुमार की अंगुली पकड़े भटकने लगी।

हे प्रभु, ऐसे संकट के समय केवल आपका ही सहारा है। सत्य और शील हम दोनों की रक्षा करें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंगल में भटकते हुए रानी को सैकड़ों आदमियों की एक टोली आती दिखाई दी। वह डर गई और पेड़ की ओट में छुप कर देखने लगी–

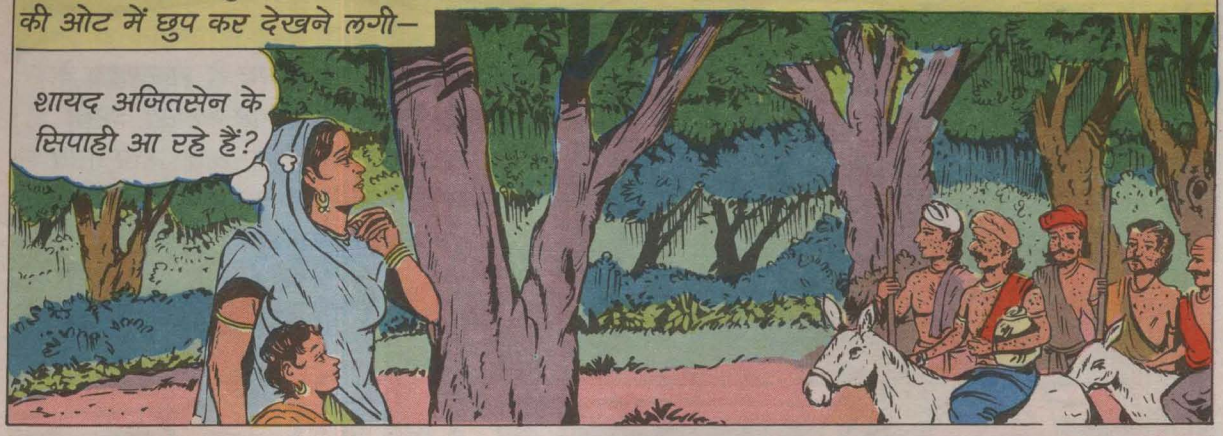

नजदीक आने पर रानी ने देखा, ये सिपाही नहीं, अपितु कोई दुःखी रोगी लोगों का दल था।

दुःखी से दुःखी को हमदर्दी होती है। रानी उनके पास आ गई और पूछा–

रानी आश्चर्य के साथ देखती रही।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोढियों के नेता (राजा) ने पूछा–

माता, हम तो दुःखी रोगी हैं। नंगल जंगल भटकना ही हमारी तकदीर हैं, आप तो किसी अच्छे खानदान की लगती हैं, ऐसी क्या आपत्ति आ गई आप पर.....?

रानी ने अपने को छुपाने की कोशिश करते हुए कहा–

भाई ! मैं भी किसी घर की लक्ष्मी हूँ, परन्तु तकदीर की मारी आज अकेली भटक रही हूँ। अगर तुम लोग आज्ञा दो तो मैं भी तुम्हारे साथ-साथ चलती रहूँ।

कोढी नेता बोला–

माताजी, आपके साथ यह राजकुमार सा बालक भी है, हमारी संगत से कहीं इसको भी कुछ रोग लग गया तो .....? नहीं ! ऐसा मत कीजिए....

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रानी ने कहा–

भाई, जो होना है उसे कौन रोक सकता है...जैसी प्रभु इच्छा ! जंगल में अकेली बच्चे को लिये घूमूँगी तो भी तो जान को खतरा हो सकता है।

बहुत सोच विचार के बाद कोढियों के राजा ने कहा–

ठीक है माताजी, जैसी आपकी इच्छा, लीजिए आप बालक को लेकर इस टट्टू पर बैठ जाइए... यह बालक आज से हमारा 'राजा' होगा। हम इसे उम्बर राणा कहेंगे।

रानी ने श्रीपाल को अपने आंचल से ढंक लिया और स्वयं टट्टू पर बैठकर सफर तय करने लगी। कुछ ही देर बाद अजितसेन के सिपाही उधर आ गये, कोढियों को देखकर दूर से ही पूछने लगे–

अरे, इधर किसी स्त्री को बच्चे के साथ जाते देखा है तुमने....?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोढी सिपाहियों को घेरकर बोलने लगे–

हमने तो किसी को इधर आते जाते नही देखा, फिर भी शक है तो हमारी तलाशी ले लो.....

हटो हटो ... हमें छूना मत–

सिपाही आगे चल पड़े।

कुछ समय बाद कोढियों के संसर्ग से राजकुमार श्रीपाल को भी महारोग हो गया। यह देखकर रानी की आँखें भर आईं–

हे प्रभु ! यह कैसी कर्मों की लीला है? मौत से बचकर भागे तो महारोग ने घेर लिया.....

एकदिन रानी ने सोचा–

इस जंगल में अनेकों चमत्कारी जड़ी-बूटियाँ हैं, मैं कहीं से महारोग की औषधि खोज कर लाऊँ और अपने बच्चे को रोगमुक्त कराऊ।

राजकुमार को कोढ़ियों के सहारे संभलाकर रानी अकेली जंगल में निकल पड़ी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजकुमार को साथ लिए कोढियों का दल कई वर्षों तक जंगलों में घूमता रहा। एक दिन दल घूमता हुआ मालव प्रदेश की सीमा में पहुँच गया।

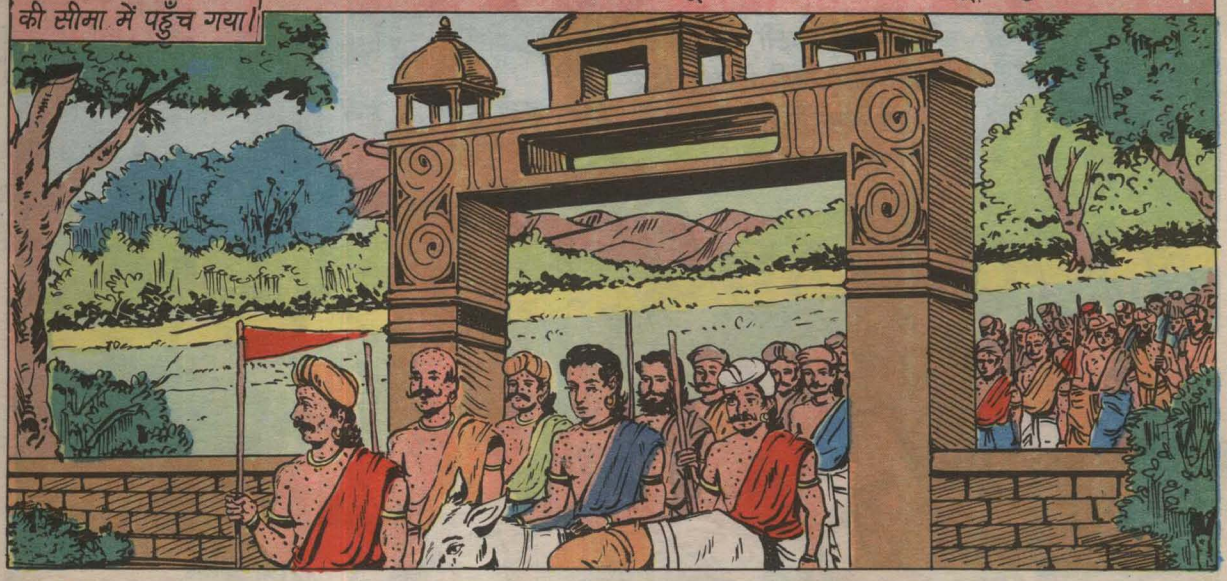

मालवा की राजधानी उज्जयिनी में उन दिनों राजा प्रजापाल राज्य करते थे। उनकी दो रानियाँ थीं, सौभाग्यसुन्दरी और रूपसुन्दरी। सौभाग्य सुन्दरी अहंकारी थी। उसकी पुत्री का नाम था सुरसुन्दरी। रूपसुन्दरी चतुर और धार्मिक स्वभाव की थी। उसकी कन्या का नाम था मैना सुन्दरी। राजा ने दोनों कन्याओं की शिक्षा के लिये एक कलाचार्य को नियुक्त किया हुआ था। एक दिन कलाचार्य दोनों कन्याओं को लेकर राजदरबार में उपस्थित हुए–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा ने कलाचार्य का सन्मान कर दोनों कन्याओं की परीक्षा ली। परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर राजा का मन बहुत सन्तुष्ट हुआ। राजा ने कहा—

पुत्रियों, हम आज बहुत प्रसन्न हैं। तुम जो चाहो, सो मांग लो। हम सब कुछ तुम्हें दे सकते हैं।

बड़ी कन्या सुरसुन्दरी बोली—

पिताजी, संसार में दो ही जीवन-दाता हैं, एक मेघ, दूसरा राजा। इसलिए आपकी कृपा से मैं सदा सुखी रहूँ बस यही चाहती हूँ।

कन्या के उत्तर से सभासदों ने तालियाँ बजाईं—

वाह ! वाह ! कितनी बुद्धिमान और समझदार है यह!

राजा का हृदय भी सुरसुन्दरी के उत्तर से बाग-बाग हो गया।

मैनासुन्दरी को मौन देखकर राजा ने कहा—

बेटी मैना ! तू मौन क्यों है? तू भी कुछ मांग...? जो मांगोगी सो दूँगा...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैना ने गंभीर होकर कहा–

पिताजी, मुझे क्षमा करें। मैं मुँह मीठी बातें करके आपको धोखे में नहीं रखना चाहती! सच यह है कि सुख-दुःख तो मनुष्य को अपने कर्मानुसार मिलते हैं। मांगने की दीनता और देने का अहंकार दोनों ही व्यर्थ हैं–

मैना की बातें सुनकर समूची सभा स्तब्ध रह गई। राजा की आँखों से अंगारे बरसने लगे।

मैना ! तुम्हें होश है, क्या बोल रही हो? राजा ही धरती का ईश्वर होता है... तुम ऐसी मूर्खता भरी बातें करके अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मत मारो!

मैना ने हाथ जोड़कर कहा–

पिताजी ! आप क्रोध न करें। मैंने तो धर्मशास्त्र में यही पढ़ा है, और इसी पर मेरा विश्वास है। सुख-दुःख की कर्ता आत्मा स्वयं ही है, तथा वह स्वयं ही इसका फल भोगती है।''

राजा प्रजापाल क्रोध में तमतमा उठे। सभा में भी घुसर-फुसर होने लगी। बात बढ़ती देखकर चतुर मंत्री ने राजा से निवेदन किया–

महाराज ! अभी आपके उद्यान भ्रमण का समय हो गया। इन बातों को कल पर छोड़ दीजिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा प्रजापाल ने सभा से उठते-उठते मैना की तरफ घूरकर देखा और बोला–

"इस मूर्ख और जिद्दी कन्या को अब मैं बता दूँगा... सुख-दुःख देने वाला कौन होता है?"

घोड़े पर बैठकर सैनिकों के साथ राजा प्रजापाल बगीचे की तरफ चल दिये। दूर से मनुष्यों का एक विशाल दल पैदल चलता आता दिखाई दिया। सबसे आगे एक व्यक्ति झंडा लिये चल रहा था। प्रजापाल ने अपने दूत को कहा–

पता करो, यह भीड़ कहाँ से आ रही है? कौन हैं यह लोग?

दूत पता लगाने चल दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूत ने लौटकर राजा को सूचना दी–

महाराज ! ७०० कोढ़ियों का एक दल है। वे आपसे कुछ पाने की आशा से इधर आये हैं।

राजा ने कोढ़ियों को अपने पास बुलवाया।

बोलो, तुम लोगों को क्या चाहिए? रहने के लिए भूमि! खाने के लिए भोजन ! जो चाहिये सब उपलब्ध करा दिया जायेगा।

कोढ़ी बोले–

नहीं, महाराज ! यह सब तो मिल ही जाता है। हमारा उम्बर राणा कुंवारा है, हमें इसके लिए एक रानी चाहिए...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगले दिन कोढ़ियों ने उम्बर राणा को सजाकर दूल्हा बनाया और गाते-नाचते बारात सजाकर राजसभा में जा पहुँचे।

बारात देखकर राजा ने मैनासुन्दरी को सजाकर राजसभा में उपस्थित करने का आदेश दिया। मैनासुन्दरी दरबार में आई तो उसे देखकर राजा की आँखें क्रोध और अहंकार से लाल हो गईं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बड़े ही गमगीन वातावरण में उम्बर राणा टट्टू पर आगे बढ़ा। मैना ने सहज भावपूर्वक कोढी श्रीपाल के गले में वरमाला डाल दी। शहनाईयों की धुन बजने लगी। सभी देखने वालों की आँखों में से आँसू बरसने लगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा ने उन्हें ठहरने के लिए नगर के बाहर एक पुराना खंडहर-सा भवन दे दिया। रात को जब मैनासुन्दरी श्रीपाल के निकट आकर चरण स्पर्श करने लगी तो श्रीपाल अचकचाकर बोल उठा—

ना ! ना ! मुझे स्पर्श मत करना ! मेरे स्पर्श से तुम्हारी यह कंचन काया भी गल जायेगी। तुम मुझसे दूर रहकर कहीं भी सुख से.....

मैना ने श्रीपाल के मुँह पर हाथ रखते हुए कहा—

नहीं, नहीं स्वामी ! ऐसी अशुभ बात मुँह से मत निकालिए। पत्नी तो छाया की तरह पति के साथ ही रहती है.. अब हम दोनों का सुख-दुःख एक है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपाल की आँखें भर आईं।

देवी ! तुम कितनी महान् हो। मेरा मन कहता है, तुम्हारी छाया पड़ते ही अब मेरे कष्ट दूर हो जायेंगे।

मैना अपने आँचल से आँसू पोंछते हुए बोली–

पिताजी ने जो कुछ किया है, वह तो मेरे ही कर्मों की प्रेरणा से हुआ है। अब मैं कुछ ऐसा धर्म कृत्य करूँ कि अशुभ कर्मों की काली घटा हटे और शुभ कर्मों का सूर्य उदय हो...

मैना और श्रीपाल रातभर सुख-दुःख की बातें करते रहे। श्रीपाल को नींद लग गई तो मैना सोचती रही।

यदि हमारे भाग्य में सुख लिखा है तो दुःख की यह काली रात जल्दी ही बीत जायेगी... हमें कुछ धर्म आराधना करनी चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगले दिन मैनासुन्दरी प्रातः जल्दी उठ गई। पास ही जंगल से लकडियाँ लाई और अपने हाथ से भोजन बनाकर श्रीपाल को खिलाया। कोढ़ियों के नेता ने यह देखा तो गद्-गद् होकर बोला–

नगर के जिस उद्यान के बाहर कोढ़ियों का दल ठहरा था, उसी उद्यान में एक तपस्वी ज्ञानी मुनिराज का आगमन हुआ। लोगों को आते-जाते देखकर मैना ने किसी पथिक से पूछा–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैना और श्रीपाल भी तपस्वी मुनि के पास पहुँचे और अपनी व्यथा बताई। मुनि ने उन्हें नवपद की आराधना करने का उपदेश दिया। नवपद की आराधना विधि सीखकर मैना श्रीपाल को लेकर वापस अपने निवास उद्यान के बाहर खण्डहर में आ गई।

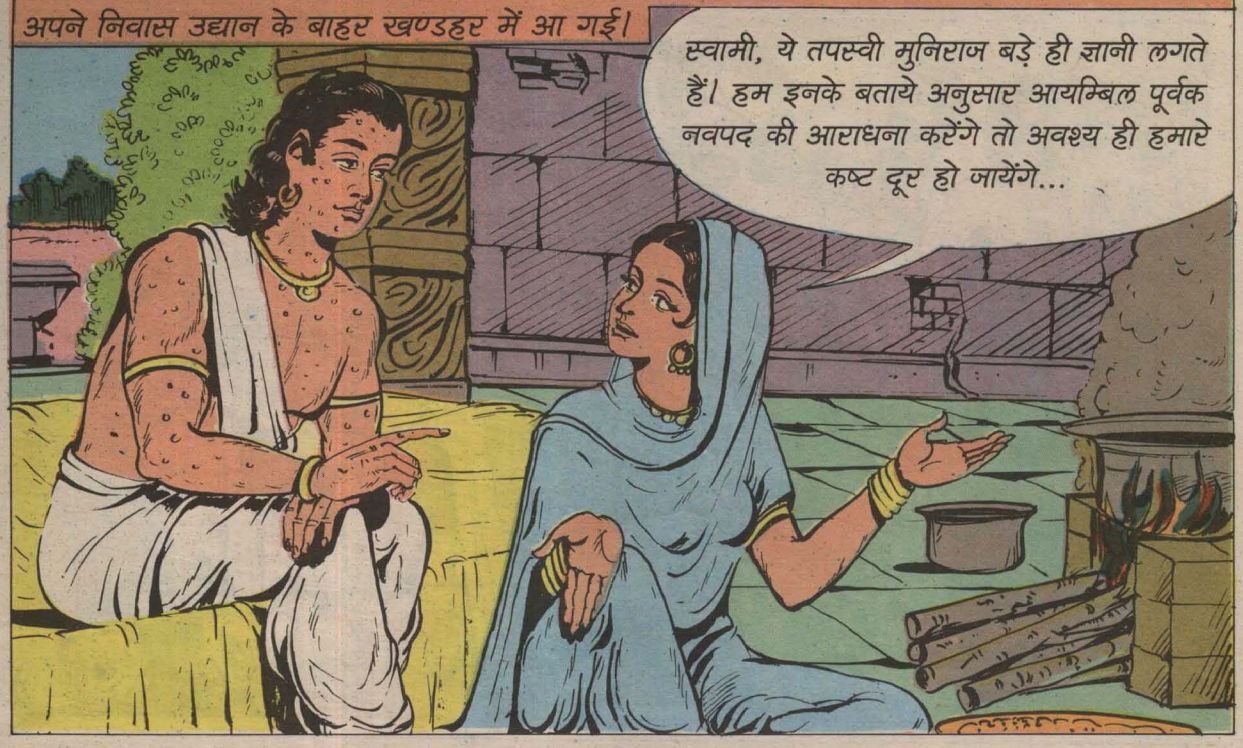

आश्विन शुक्ला सप्तमी से दोनों ने नवपद की आराधना प्रारम्भ कर दी। काँसे की थाली में रोली अक्षत से सिद्धचक्र महामंत्र की आकृति माँड़ी। एक श्रावक ने उनके आयम्बिल की व्यवस्था भी कर दी।

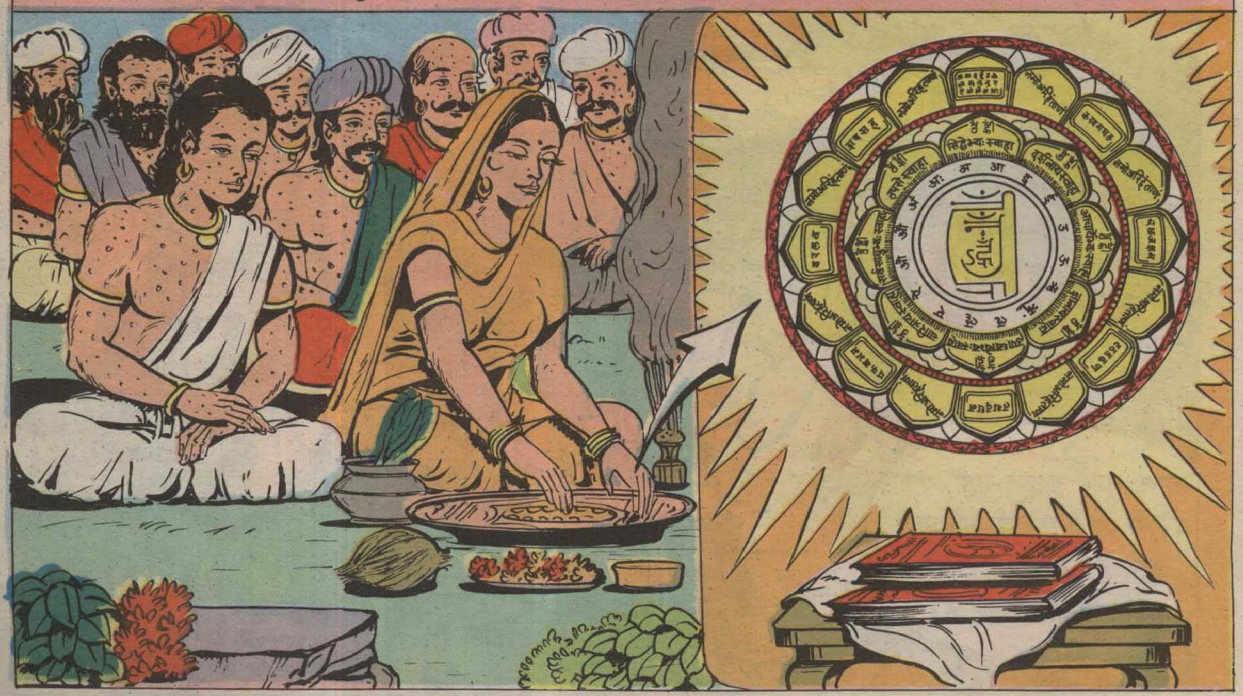

● नवपद एवं सिद्धचक्र की आराधना विधि पुस्तक के अन्त में देखें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नौ दिनों तक आयम्बिल सहित नवपद का अखण्ड पाठ एवं सिद्धचक्र की आराधना चलती रही। श्रीपाल सहित सभी कोढ़ी श्रद्धापूर्वक देव गुरु धर्म की आराधना करते रहे।

नौवें दिन मैनासुन्दरी ने सिद्धचक्र का प्रक्षालित जल श्रीपाल पर छिड़का। श्रीपाल ने कहा–

आयम्बिल = पूरे दिन में एक समय नमक एवं चिकनाई रहित एक ही प्रकार का धान खाकर रहना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपाल की बातें सुनकर सभी कोढ़ी एकत्र हो गये।

अरे देखो, भगवान ने क्या चमत्कार किया है। हमारा उम्बर राणा बिलकुल देवकुमार जैसा दीखने लगा है..

मैनासुन्दरी ने सिद्धचक्र का अभिमंत्रित जल सभी कोढ़ियों के शरीर पर छिड़का। आराधना-साधना श्रद्धा और शील-शक्ति ने अपना दिव्य प्रभाव दिखाया।

अरे ! यह क्या चमत्कार हुआ? कुछ क्षणों में ही हम सब स्वस्थ और सुन्दर दीखने लगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैनासुन्दरी ने कहा—

बंधुओ ! यह सब भाव भक्तिपूर्वक की गई नवपद की आराधना और सिद्धचक्र का चमत्कार है। आप सब रोग-मुक्त हो गए। धन्य है गुरुदेव की कृपा !!

उन व्यक्तियों ने मैनासुन्दरी से कहा—

बहन ! हम सबको नया जीवन मिला है, अब हमें अपने-अपने घर जाकर परिवार से मिलना चाहिए।

सभी ७०० व्यक्ति अपने-अपने नगर की तरफ चले गये।

मैना-श्रीपाल वहीं उसी उद्यान में रहने लगे। श्रीपाल की माता कमलप्रभा भी घूमती-घूमती एक दिन उज्जयिनी के इसी उद्यान में आकर वृक्ष के नीचे बैठी थी कि श्रीपाल ने उसे पहचान लिया—

अरे, यह तो मेरी माँ है। कितने वर्ष हो गये इनसे बिछुड़े हुये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपाल पास पहुँचकर अपनी माँ के चरणों में लिपट गया। कमलप्रभा अचकचा गई।

मैनासुन्दरी ने भी माता के चरण छूए। कमल प्रभा ने दोनों को हृदय से लगा लिया। बहुत देर तक एक-दूसरे को अपनी-अपनी आत्म-कथा सुनाते रहे। कमलप्रभा उसी उद्यान में श्रीपाल-मैनासुन्दरी के साथ रहने लगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन श्रीपाल-मैना मुनिराज के दर्शन करके लौट रहे थे कि मार्ग में ही उधर से आती रानी रूपसुन्दरी दिखाई दी। रानी ने मैना को एक सुन्दर दिव्य पुरुष के साथ देखा तो विचारों में उथल-पुथल मच गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैना माता की नफरत का कारण समझ गई। वह उसे अपने घर पर ले आई। मैना के कहने पर रानी कमलप्रभा ने रूपसुन्दरी को बताया–

यह मेरा पुत्र श्रीपाल है... चम्पा के महाराज सिंहरथ का पुत्र। कोढ़ियों के संसर्ग से कुष्टरोग लग गया था, किन्तु अब तुम्हारी पुत्री के भाग्य से बिलकुल ठीक हो गया है।

रूपसुन्दरी ने मैना से क्षमा माँगी–

पुत्री ! मुझे माफ कर देना। तुझ पर असत्य आरोप लगाया।

नहीं माँ ! ऐसा तो होता ही रहता है....

तब तक मैनासुन्दरी के मामा राजा पुण्यपाल भी अपनी बहन रूपसुन्दरी को ढूँढ़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा। मैना ने उसे पूरी घटना सुना दी। वह बोला–

बेटी, जिस दिन से तुम घर से विदा हुई। उसी दिन से तुम्हारी माँ राजमहल को त्यागकर मेरे यहाँ आ गई। यह तुम्हारी याद में आंसू बहाती रहती है। चलो बेटी, अब हम सब एक साथ महल में रहेंगे।

बेटी, आज मैं सब दुःख भूल गई हूँ किसी ने सच कहा है, दुःख की रात के बाद सुख का सूरज उगता ही है।

पुण्यपाल सबको अपने महल में ले आया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इधर राजा प्रजापाल पुत्री के साथ किये अन्याय पर रात-दिन पश्चात्ताप करते रहते थे।

मैंने कितने पाप किये हैं? पुत्री और पत्नी को कितने कष्ट दिये हैं...? रानी रूपसुन्दरी भी घर छोड़कर चली गई।

एक दिन मन बहलाने के लिए राजा उद्यान भ्रमण करने निकले तो उद्यान के पास पुण्यपाल के महल की ओर ऊपर उनकी निगाह चली गई। महल के झरोखे में मैनासुन्दरी पति के साथ बैठी हँसी-मजाक करती दीखी। राजा प्रजापाल एकदम गंभीर हो गये।

यह क्या? मैना किसी पराये राजकुमार के साथ बैठी है? छि:छि: मेरे कुल को डुबो दिया इसने...?

अनेक बुरे विचारों में उलझे उत्तेजित से हुए राजा प्रजापाल पुण्यपाल के भवन में आ धमके। और मैना को बुलाकर फटकारने लगे—

मुझे आशा नहीं थी कि मेरी बेटी ऐसी नीच निकलेगी...? मैंने एक कुष्टी युवक के साथ इसका विवाह किया था, परन्तु आज तो यह एक सुन्दर देवकुमार से पुरुष के साथ महलों में बैठी मनोरंजन कर रही है। धिक्कार है इसे....

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा की बातें सुनकर सभी मुस्कराने लगे। पुण्यपाल ने कहा—

महाराज ! यह आप क्या कह रहे हैं? यह पर-पुरुष नहीं, किन्तु वही कोढ़ी उम्बर राणा है, जो वास्तव में चम्पानगरी के राजा सिंहरथ का पुत्र श्रीपाल है!

हैं...! सच...? यह सब क्या रहस्य है?

मैनासुन्दरी ने उन्हें पूरी घटना सुनाकर कहा—

पिताजी ! आप यदि इनके हाथ में मेरा हाथ नहीं देते तो यह सब कैसे होता? धर्म के प्रभाव से तकदीर की तस्वीर बदलते क्या देर लगती है...?

मैनासुन्दरी के वचन सुनकर राजा की आँखों से हर्ष के आँसू बहने लगे।

बेटी, तू महान् है, जो पिता के अन्याय को भी उपकार मान रही है.. मेरा अपराध तो अक्षम्य है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

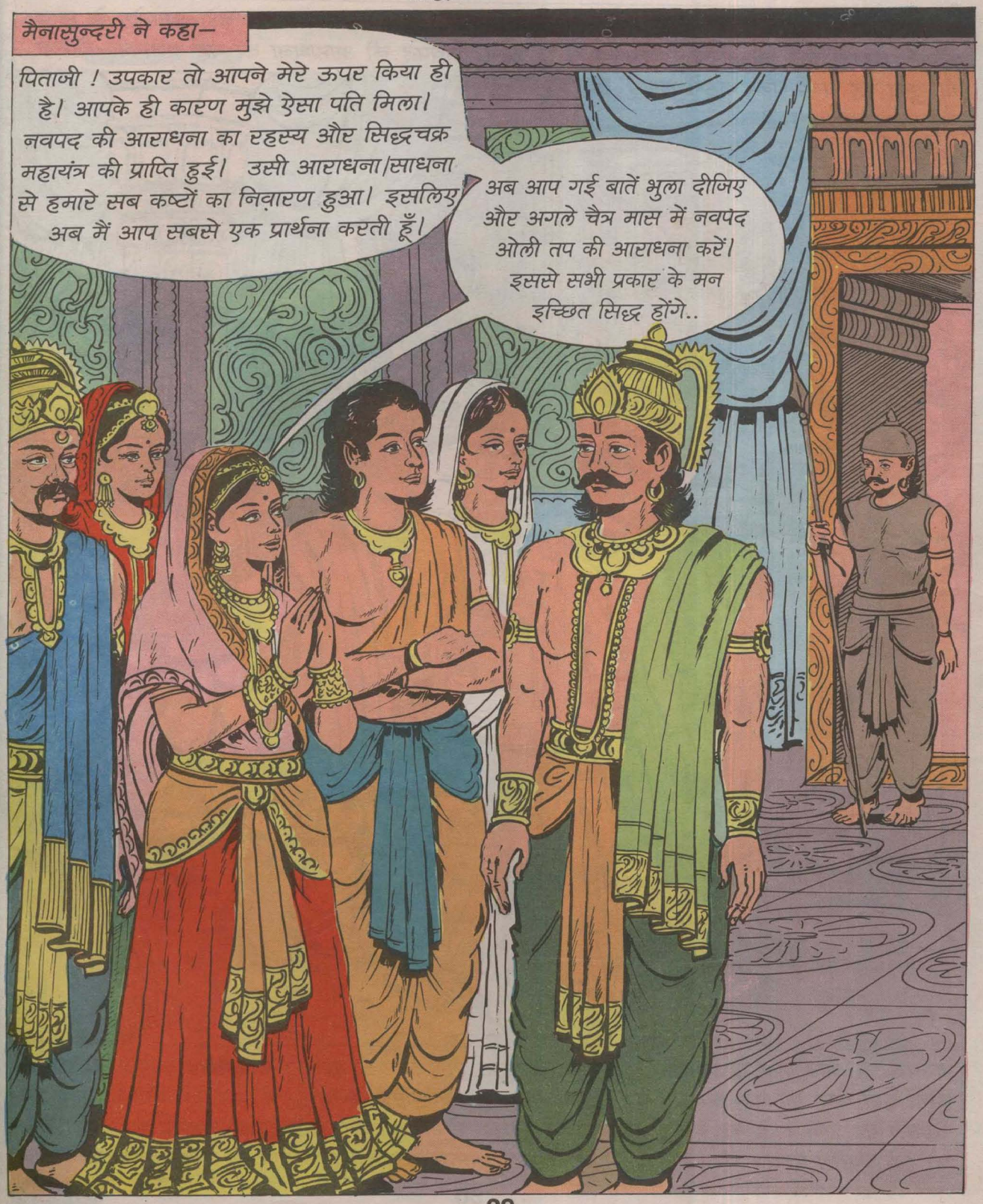

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रजापाल ने मैनासुन्दरी का वचन स्वीकार किया। दूसरे दिन राजा प्रजापाल बड़े समारोह के साथ श्रीपाल-मैनासुन्दरी को अपने राजभवन में ले आये। नवपद की आराधना का यह चमत्कार जिसने भी सुना वह धन्य-धन्य कहने लगा।

नवपद की आराधना के प्रभाव से श्रीपाल का कुष्ट रोग मिटना, अमित बल-वैभव-ऐश्वर्य की प्राप्ति होना इस कथा का एक अध्याय है। श्रीपाल-मैनासुन्दरी चरित्र के अनुसार आगे की विस्तृत कथा में श्रीपाल का राज-राजेश्वर बनना तथा अनेक रोचक रोमांचक चमत्कारी घटना प्रसंगों का वर्णन है। जो एक स्वतंत्र पुस्तक का विषय है। जिसे अगली पुस्तक में प्रकाशित करने का प्रयास किया जायेगा।

समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाप्यमूलमंत्रोः ॐ ह्रीं अर्हं नमः। सर्वलब्धिसंपन्नाय ॐ ह्रीं अर्हं श्री गौतमगणधराय नमोनमः ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं असिआउसा नमः॥

॥ ९८०॥ पूज्यप्रवर प्रातःस्मरणीय आचार्य १००८ श्रीमद् विजयमोहनसूरीश्वर पट्टालंकार परमपूज्य आचार्य श्रीमद् विजयप्रतापसूरीश्वर पट्टालंकार परमकृपालु पूज्य आचार्य विजयधर्मसूरीश्वर पट्टालंकार पूज्य मुनिप्रवर श्री यशोविजयेन शाश्वत- महाप्रभावक श्रीसिद्धचक्रमहायन्त्रकमिदं अद्यावधिप्रकाशिताप्रकाशितग्रन्थचित्रपटादिसामग्रीमवलम्ब्य यथानुभवं यथामति परंपरागताशुद्धीर्निराकृत्य समालेखि॥

संयोजक-पू. मुनिश्री यशोविजयजी

महाम्बा[मुंबई] पुर्यां वैक्रमीयचतुर्दशाधिक द्विसहस्र[२०१४] संवत्सरे शुभंभवतु चतुर्विधश्रीसंघस्य। विद्याप्रवादपूर्वोद्धृतमिदंमहायन्त्रकं सदा ध्येयम्।

चित्रकार-रमणिक शाह डभोई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवपद आराधना विधि

प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला सप्तमी से पूर्णिमा तथा आसोज शुक्ला सप्तमी से पूर्णिमा तक नवपद आराधना ओली तप किया जाता है। जिसकी संक्षिप्त विधि इस प्रकार है–

१. पहले दिन चावल का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो अरिहंताणं' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना १२, लोगस्स १२, णमोत्थुणं १२, खमासणा १२ का पाठ करें।

२. दूसरे दिन गेहूँ का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो सिद्धाणं' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना ८, लोगस्स ८, णमोत्थुणं ८, खमासणा ८ का पाठ करें।

३. तीसरे दिन चने का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो आयरियाणं' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना ३६, लोगस्स ३६, णमोत्थुणं ३६, खमासणा ३६ का पाठ करें।

४. चौथे दिन मूँग का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो उवज्झायाणं' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना २५, लोगस्स २५, णमोत्थुणं २५, खमासणा २५ का पाठ करें।

५. पाँचवें दिन उड़द का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो लोए सव्व साहूणं' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना २७, लोगस्स २७, णमोत्थुणं २७, खमासणा २७ का पाठ करें।

६. छठे दिन चावल का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो णाणस्स' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना ५, लोगस्स ५, णमोत्थुणं ५, खमासणा ५ का पाठ करें।

७. सातवें दिन चावल का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो दंसणस्स' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना ८, लोगस्स ८, णमोत्थुणं ८, खमासणा ८ का पाठ करें।

८. आठवें दिन चावल का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो चरित्तस्स' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना १३, लोगस्स १३, णमोत्थुणं १३, खमासणा १३ का पाठ करें।

९. नौवें दिन चावल का आयंबिल करके ॐ ह्रीं श्रीं 'णमो तवस्स' पद की २१ माला फेरें। साथ ही–वंदना १२, लोगस्स १२, णमोत्थुणं १२, खमासणा १२ का पाठ करें।

एक वर्ष में दो बार (चैत्र तथा आसोज में) ओली तप करते हुए नव ओली में साढ़े चार वर्ष का समय लगता है जिसमें ८१ आयंबिल में नवपद ओली तप की आराधना सम्पन्न होती है।

विशेष : अरिहंतों के १२ गुण, ● सिद्ध भगवान के ८ गुण, ● आचार्य भगवंत के ३६ गुण, ● उपाध्यायजी के २५ गुण, ● साधुजी के २७ गुण, ● ज्ञान के ५ प्रकार, ● दर्शन के ८ अंग, ● चारित्र के १३ अंग, ● तप के १२ प्रकार।

ये सब १४६ गुण व प्रकार होने से १४६ वंदना तिक्खुत्तो के पद से की जाती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर आपको ही खोजना है...

हम युग-युग से करुणा और अनुकम्पा की महिमा गाते आ रहे हैं,

अहिंसा और दया का उद्घोष मुखर करते आ रहे हैं,

महावीर और बुद्ध, नानक और गाँधी, मुहम्मद और ईसा की इबारतें सुनाकर

अहिंसा, करुणा, प्रेम, भाईचारा और सेवा की पुकार करते आ रहे हैं ?

परन्तु,

शून्य में गूँजती आवाज़ की तरह हमारी सब आवाज़ें अर्थहीन हो रहीं हैं !

हिंसा, हत्याएँ, युद्ध, साम्प्रदायिक उन्माद, जातीय संघर्ष, भय एवं आतंक का जहर मानव को संवेदना शून्य बनाता जा रहा है।

क्यों ?..... सोचे ! विचारे !

कहीं हमारी भूल, हमारी भोग-लिप्सा, हमारी स्वार्थवृत्ति, अज्ञान, उपेक्षा/लापरवाही, जैसा चल रहा है, वैसा चलने देने की लच्चर मनोवृत्ति,

हमें अपने कर्त्तव्य से, धर्म से, न्याय-नीति से, उत्तरदायित्व की भावना से भ्रष्ट तो नहीं कर रही है ?

हम क्या कर रहे हैं ? और क्या करना चाहिए ?

हिंसा की खूनी होली में हमारी कितनी भागीदारी हैं ? सोचिए,

उत्तर आपको ही खोजना है।

निवेदक :

शाकाहार एवं व्यसनमुक्ति कार्यक्रम के सूत्रधार–

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

"नयनतारा", सुभाष चौक, जलगांव-४२५ ००१

फोन : २३९०३, २५९०३, २७३२२, २७२६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपाध्याय प्रवर पं. रत्न मुनि श्री कन्हैयालाल जी म. सा. "कमल" की प्रेरणा से स्थापित

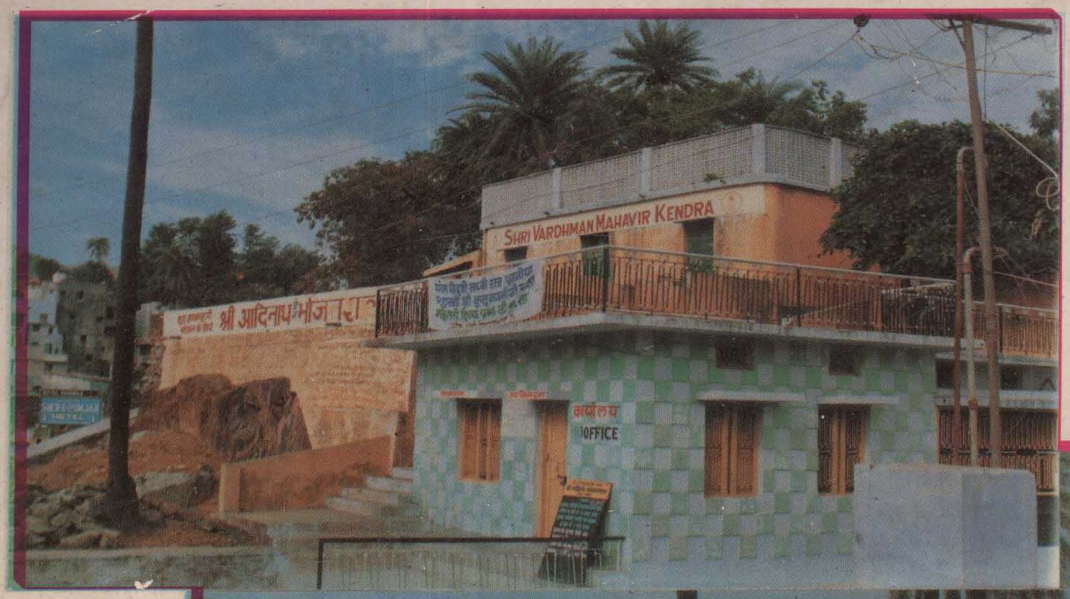

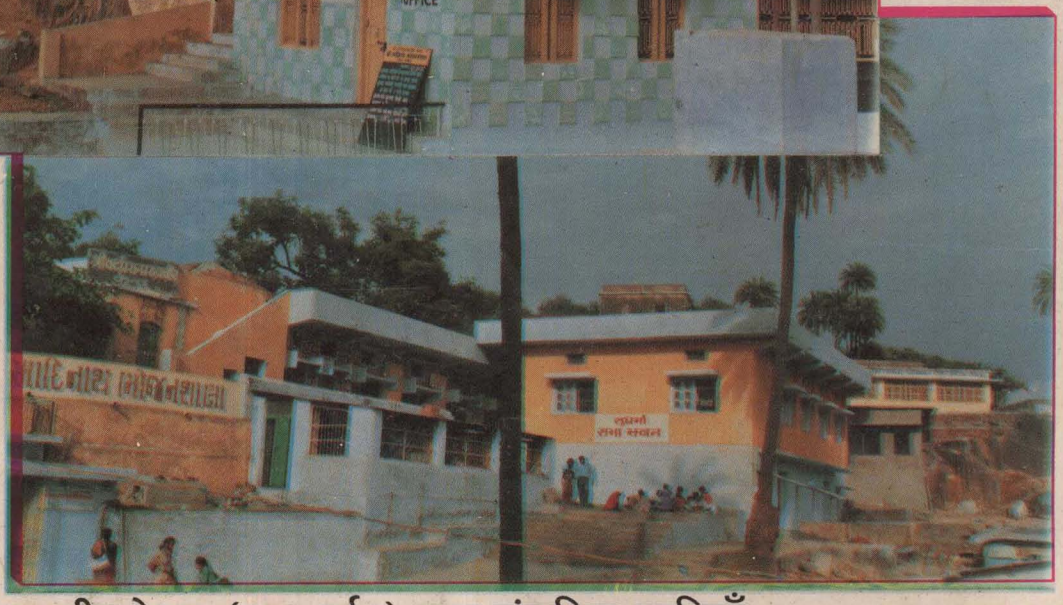

श्री वर्धमान महावीर केन्द्र, (आबू पर्वत) द्वारा संचालित प्रवृत्तियाँ :–

यात्रियों के लिए–

❋ सुरम्य प्राकृतिक वातावरण के मध्य सुन्दर सुविधापूर्ण आवास व्यवस्था ❋ शुद्ध शाकाहारी भोजन व्यवस्था
❋ प्रतिवर्ष चैत्र मास में आयंबिल ओली का विशेष आयोजन ❋ होम्योपैथिक औषधालय
❋ विशाल उच्चस्तरीय पुस्तकालय ❋ जीव दया एवं मानव राहत कार्य

संबन्धित संस्थाएँ–

1. श्री वर्धमान ध्यान साधना केन्द्र
2. श्री वर्धमान महावीर बाल निकेतन

पधारिये :–मार्गदर्शन दीजिये, सहयोग कीजिए।

श्री वर्धमान महावीर केन्द्र

सब्जी मंडी के सामने, देलवाड़ा रोड़, आबू पर्वत-307 501

S. T. D. No. : 02974 Phone No. : 3566

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org